R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 23वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

शोध पत्र

(हिंदी साप्ताहिक)

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

मां शक्ति को समर्पित विशेषांक

वर्ष 23 | अंक 23 | रविवार, इलाहाबाद, 29 अक्टूबर 2023 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

संपादकीय

मां शक्ति को समर्पित विशेषांक

मां शक्ति के ही चरणों में ,
मिलता सुख का द्वार ।
सब जन का माँ कारा हरती ,
देती समृद्धि अपार ।

मां के दरबार में इस बार की काव्य माला में गीतों, भजनों के माध्यम से कविता कर्मियों ने अपने-अपने भावों का पुष्प अर्पित किया। मां के दरबार में पढ़ी गई सारी रचनाए सुंदर रहीं। मां के विविध रूपों का मनोहारी चित्रण, मां के रूप की दिव्यता और मां के द्वारा भक्तों के उद्धार के लिए किए गए कार्यों की दक्षता को सभी रचनाकारों ने अपने-अपने तरीके से अपनी-अपनी कविताओं के माध्यम से व्यक्त किया। इस संदर्भ में कवयित्री सुमन ढींगरा दुग्गल ने कहा-

तेरे बिन मेरा नहीं कोई सहारा ऐ माँ
बिगड़ी बनती है तुझे जब भी पुकारा ऐ माँ ।

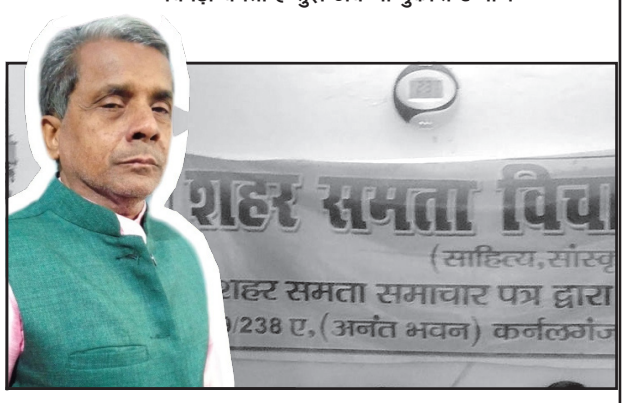

खुशियाँ लाये हैं ये नौ दिन तेरे मंगलकारी
आज सुंदर तेरा दरबार सँवारा ऐ मा।

जगमगाता है तेरी जोत से मंदिर ऐसे
जैसे रौशन कोई अंबर में सितारा ऐ माँ ।

जब कभी घिर गयी तूफान मे कश्ती मेरी
तेरी कृपा से मिला मुझको किनारा ऐ माँ ।

इसी प्रकार विभा श्रीवास्तव की पंक्तियों में मां के रूपों का अल बेला चित्रण रहा। उन्होंने कहा -

तेरी ममता का क्या गुणगान करू,
तू ही तो जग आधारा है ।
मै थी एक दुखिया बेचारी सी,
तूने ही तो मुझको उबारा है ।

मेरे सुख-दुख की साथी तू ही मां,
मेरे जीवन की सारथी तू ही माँ।
मेरे हर पल की साक्षी तुम ही हो ,
तूने ही तो मुझको संवारा है।

तेरी ममता.....आधारा है।

शक्ति प्रदाता माँ की लीलाओं से युक्त रचनाएं पढ़ी गई। काव्य गोष्ठी में शामिल होने वाली सभी रचनाकारों को एक बार पुनः बधाई और यही कामना है कि मां की कृपा हम सब पर बनी रहे और मां हम सब को सुखी , समृद्ध और विवेकशील बनाएं। अंक कैसा लगा, प्रक्रिया जरूर दें।
अंत में

माँ के इस दरबार में ,
माँ का ही गुणगान ।
माँ ही देती है हमें ,
ज्ञान, बुद्धि , विज्ञान ।

उमेश श्रीवास्तव

रचना सक्सेना

ग़ज़ल

शहर मे आज हर मंदिर यहाँ माँ का सजा होगा
चुनरिया लाल ओढ़े माँ सभी को यह पता होगा।

सवारी शेर की करके भवानी माँ सदा आती
लगी है भीड़ मंदिर में जो भक्तों से भरा होगा।

करूँ श्रृंगार माँ तेरा यही ख्वाहिश हमारी थी
जरा देखो यहाँ दरबार घर पर भी सजा होगा।

रखा भी है कलश हमने लगा कर आम के पत्ते
अगर आई जो घर मेरे तो मेरा मन हरा होगा।

सजाया थाल है हमने जलाकर दीप को उसमे,
करी कृपा भवानी माँ तो रचना का भला होगा ।

उमा मिश्रा प्रीति

आ जाओ मेरी मां अंबे

दर्शन को मैया तरसे मेरे नैन
आ जाओ मेरी मां अंबे..

मैं बिरहनि दरसन की प्यासी.
चित्त चढ़ी है घोर उदासी..
आजा ओ माता अंबे .
जुड़ि गयौ तोसे मोर जिया रे.
मैं शरणागत भई तिहारी..
आ जाओ मेरी मां अंबे.....

तेरे दरस बिना दिन बीते.
पल छिन मेरे सब गए रीते.
तुम हो भगत बछल सुखदाई.
मोरी सुधि कैसे बिसराई..
मैं अरदास करति थकि हारी..
आ जाओ मेरी माता अंबे...

नैन निरखि तकि तकि मैं हारी.
आ जाओ मेरी माता अंबे..

सुमन ढींगरा दुग्गल

ऐ माँ

तेरे बिन मेरा नहीं कोई सहारा ऐ माँ
बिगड़ी बनती है तुझे जब भी पुकारा ऐ माँ ।

खुशियाँ लाये हैं ये नौ दिन तेरे मंगलकारी
आज सुंदर तेरा दरबार सँवारा ऐ मा।

जगमगाता है तेरी जोत से मंदिर ऐसे
जैसे रौशन कोई अंबर में सितारा ऐ माँ ।

जब कभी घिर गयी तूफान मे कश्ती मेरी
तेरी कृपा से मिला मुझको किनारा ऐ माँ ।

फिक्र मुझको भला किस बात की हो दुनिया में
जब तलक़ सर पे मेरे, हाथ तुम्हारा ऐ माँ ।

मुश्किलें दूर हुईं छट गये ग़म के बादल
जब मुसीबत में तुझे हमने पुकारा ऐ मा।

देख के आप का दरबार गुमां होता है,
आप ने स्वर्ग को धरती पे उतारा ऐ माँ ।

मेहरबां तू है तो सब साथ हैं दुनिया वाले,
तू नहीं है तो नहीं कोई सहारा ऐ माँ।

आगमन आपका जब से है 'सुमन' के घर में ,
घर बना स्वर्ग से सुंदर ये हमारा ऐ माँ ।

अनीता दुबे

मैया विनती करू।

मैया विनती करूं दोनों कर जोरी,
मैया अन् भी दिया तूने धन भी दिया।
छज्जे चौबारे बहुत दिए मैया,
पुत्र दिए तूने भर गोदी।
मैया विनती करूं दोनों करजोरी,
मैया एक विनती हम बहनों की करो
चटक चुनरिया बहनों की,
एम वस्तु कहे दुर्गा बोली
तेरी मनसा पूरण हो बहनी
मैया विनती करूं दोनों करजोरी! !

सुषमा सिंह उर्मि

कुष्मांडा

जय हो कुष्मांडा माता,
जगत में सुख करनी।
भक्तों के हरो क्लेश,
माता तुम दुःख हरनी।

दया सभी पर करती मां,
उर में मां के ममता भरी।
सकल भक्त सुमिरन करें,
मां तूने सबकी विपदा हरी।

संकट सबका करो दूर ,
काज सभी के सफल करें।
सभी के जीवन में माता तुम,
ज्ञान का अनंत भंडार भरें।

जो नित करे मां का पूजन,
उसको मां यश,बल हे देती।
आदिशक्ति तुम कहलाती हो---
रोशन जीवन मां! तुम कर देती।

अष्ट भुजा देवी माता,
हाथ कमंडल,गदा लिए।
भक्तों की करती मन्नत पूरी,
माता सिंह पर सवार हुए।

हे कुष्मांडा! माता मुझको,
तुम दो नवल उत्थान।
नवरात्रि के पावन पर्व में,
सभी करें माता का ध्यान।।

डा. योगिता सिंह 'हंसा'

सज रहा मैया तेरा द्वार

सज रहा मैया तेरा द्वार लाल फूलों से
लाल फूलों से गुलाबी कलियों से
सज रहा मैया तेरा द्वार .....
मेरे घर आई मैया लाल चुनर ओढ़े
माथे बिंदिया , नथ हैं झूले
करो सत्कार मेरी मैया का
सज रहा मैया तेरा द्वार.....
लाल फूलों से .....
मेरे घर आई मैया हथ फूल पहने
लाल साड़ी , पांव पाज़ेब बजे
करो जय जयकार मेरी मैया का
सज रहा मैया तेरा द्वार .....
लाल फूलों से.....
मेरे घर आई मैया मंगल लेके
अखंड सुहाग , वरदान देके
करो श्रृंगार मेरी मैया का
सज रहा मैया तेरा द्वार .....
लाल फूलों से.....
मेरे घर आई मैया विपदा हरने
मांगे ऐसा वरदान , भक्ति तेरी करें
करो कीर्तन बारंबार मेरी मैया का
सज रहा मैया तेरा द्वार .....
लाल फूलों से .....
मेरे घर आई मैया भक्ति लेके
भक्तां की , सब पीड़ा हरने
करो जगरात्रा मेरी मैया का
सज रहा मैया तेरा द्वार .....
लाल फूलों से .....
मेरे घर आई मैया सोलह श्रृंगार करके
देती वो सबको , स्नेह प्यार भर के
चलो पोढ़ी पोढ़ी मैया के द्वार भक्तों
सज रहा मैया तेरा द्वार .....
लाल फूलों से

अनुराधा गर्ग 'दीप्ति'

नवदुर्गा

नवदुर्गा के नौ रूपों को पूजे हैं संसार।
मात करतीं सबका कल्याण ।
सिंह सवारी वाली मैया ,
आईं गज पे सवार।
मात करतीं जग का कल्याण।

प्रथम शैलपुत्री कहलातीं,
पिता हिमाचल के घर जनमीं।
द्वितीय ब्रह्मचारिणी हो माते,
संयम नियम का पाठ पढ़ातीं।
माथे पर घंटा सा चंदा,
चंद्रा घंटा है नाम।
करतीं सुख शांति संचार..
मात जग का करती कल्याण।

कुष्मांडा भय को हर लेतीं,
राह सफलता की है देतीं।
कार्तिकेय की मां हो माते,
स्कंदमाता हो कहलातीं।
कात्यायन की पुत्री रूप में,
कात्यायनी है नाम।
हरतीं रोग शोक संताप
मात करतीं जग का कल्याण।

कालरात्रि सिद्धि देतीं हो,
उन्नति की राहें खोलतीं हो।
महागौरी का रूप हो माते,
उज्ज्वल चरित्र का बल देतीं हो।
हर सिद्धि को देने वाली
सिद्धिदात्री है नाम ।
कुशलताओं को देंय निखार
मात करतीं जग का कल्याण।

सौम्या शर्मा

स्तुति

चारों दिशा में गूंजे, जयकारा मां का!
भक्तों का है सहारा, जयकारा मां का!

कोई दिल से बुलाए तो मैया दौड़ी आए!
नयन किसी के भींगे तो मैया कृपा बरसाए!
सब जन मिल के लगाएं,जयकारा मां का!
भक्तों का है सहारा, जयकारा मां का!

दुर्गा,काली,भवानी,तू ही मां कल्याणी!
चामुण्डा भी तू ही ,तू ही जग महारानी!
हर लेगा दुःख सारा, जयकारा मां का!
भक्तों का है सहारा, जयकारा मां का!

चारों दिशा में गूंजे, जयकारा मां का!
भक्तों का है सहारा, जयकारा मां का!

पुष्पा सिंह

नवदुर्गा

सभी लोगों को जय माता की,
मां आप सब की झोलियां खुशियों से भर दें
ऐसी हम कामना करते हैं ।
मां के चरणों में एक छोटी सी भेंट है

मां तेरे आने की आहट सुन,
बैठे हैं लाखों करोड़ों भक्त
अपना दिल थाम के,
घर-घर मे बोए है मां
जवारे तेरे नाम के,
सर पर ओढे चुनरी लाल
बिंदिया भी तेरी लाल है
जिसके सिर पर हो तेरा हाथ मां
वह तो यूं ही मालामाल है ।
मां मेरा जीवन तेरे सहारे
झोली फैलाए खड़ी तेरे द्वारे,
एक नजर हम पर डालकर मां,
हमें भी तार दो, कष्टों को निवार कर,
मां हमें भी खुशियों का अंबार दो।

डा.स्नेह सुधा

मैं तेरी करूणा के गीत

मैं तेरी करूणा के गीत,
गाता रहा हूं गाता रहूंगा।
मैं तेरी करूणा के गीत.....
लहरों की सीमाओं को तोड़कर,
सागर उमड़ता है जब शोरकर
तेरे इशारे पे ही शांत हो,
जाता सिमट भय से आक्रांत हो।
मैं तेरी महिमा के गीत,
गाता रहा हूं गाता रहूंगा।
मैं तेरी करूणा के गीत.....
तेरी है धरती तेरा है गगन,
जो भी हैं उसमें है तेरा सृजन।
धर्म और न्याय है तेरा चलन,
करूणा सच्चाई तेरा अनुगमन।
मैं तेरी गरिमा के गीत,
गाता रहा हूं गाता रहूंगा।
मैं तेरी करूणा के गीत.....
पीड़ित से पीड़ित तलक हर युगों में,
तेरी सच्चाई जताता रहूंगा।
मैं तेरी करूणा के गीत,
गाता रहा हूं गाता रहूंगा.....

डॉ कुमकुम शुक्ला

कुष्मांडा

जय हो कुष्मांडा माता,
जगत में सुख करनी।
भक्तों के हरो क्लेश,
माता तुम दुःख हरनी।

दया सभी पर करती मां,
उर में मां के ममता भरी।
सकल भक्त सुमिरन करें,
मां तूने सबकी विपदा हरी।

संकट सबका करो दूर ,
काज सभी के सफल करें।
सभी के जीवन में माता तुम,
ज्ञान का अनंत भंडार भरें।

जो नित करे मां का पूजन,
उसको मां यश,बल हे देती।
आदिशक्ति तुम कहलाती हो---
रोशन जीवन मां! तुम कर देती।

अष्ट भुजा देवी माता,
हाथ कमंडल,गदा लिए।
भक्तों की करती मन्नत पूरी,
माता सिंह पर सवार हुए।

हे कुष्मांडा! माता मुझको,
तुम दो नवल उत्थान।
नवरात्रि के पावन पर्व में,
सभी करें माता का ध्यान।।

मनीषा श्रीवास्तव

मां आई मेरे द्वार

शेरावाली के गीत गुनगुनाते हुए, सर झुकाते हुए।
हम तो ऊँची पहाड़ी चढ़ ही गई चढ़ ही गए।
माता रानी के गीत गुनगुनाते हुए, सर झुकाते हुए।
हम तो ऊँची पहाड़ी.....

ध्वजा हाथ लिए संग दीपक जले
वैष्णव दर्शन का हमनें ठान लिया।
अब रुके न कदम बस तो चलते चले।
उनसे मिलने का मूल मंत्र जान लिया।
ढोल-ताशें जयकारे लगाते हुए, सर झुकाते हुए।
हम तो ऊँची पहाड़ी.....

जब भी पांव में काटें चुभे राह में।
सतरूपा का हमनें ध्यान किया।
शूल चुभते हुए अब तो फूल बने।
अपने भक्तों का माँ ने मान किया।
माँ के गुणगान को हम गाते हुए, सुर लगाते हुए।
हम तो ऊँची पहाड़ी.....

हैं गुफाओं के भीतर से ये रास्ते।
झरते झरने है नग से माँ के वास्ते।
भव्य दर्शन मिला अश्रुधार बही।
कह दी बातें सभी उनसे कही अनकही।
माँ की चौखट पर हम सिर टिकाते हुए, दुख बताते हुए।
हम तो ऊँची पहाड़ी.....

सिम्पल काव्यधारा

माँ कूष्मांडा

चतुर्थ हैं कूष्मांडा माता
नवरात्रि में हो जगराता
भक्ति-भाव से करो साधना
तन में रहता कोई व्याध ना

आदिशक्ति माँ आदि स्वरूपा
गदा-चक्र धनु पद्म अनूपा
कुम्हड़े का बलि माँ को भाता
नाम पड़ा कूष्मांडा माता

ब्रम्हांड को उत्पन्न करने वाली
माँ की महिमा अजब निराली
सिंह की करके चली सवारी
माँ ने दैत्यों की सब सेना मारी

माँ कूष्मांडा नाम है प्यारा
महिमा गाता है जग सारा
सूर्य लोक के भीतर रहती
जै माता दी दुनिया कहती

कान्ति-प्रभा है सूर्य की भाँति
है संसार में माँ की ख्याति
जप की माला सिद्धि वाली
अद्भुत छवि है शेरावाली

रत्ना बापुली

मेरी कविता

जय जय दुर्गे, जय जय अम्बे,
जय मॉ असुर संहारिणी ।
एक नाम और ले लो माता,
कहलाओ आतंक विनाशिनी ।

मातृ शक्ती की अनुपम काया,
इस धरती पर अब भी छाया ।
करो प्रदान तुम चहुओर,
शक्ती यही संहारिणी ।
जय जय -------

मॉ केवल बस मॉ होती है,
गोद मे जिसकी पलती ममता ।
दुर्गा कहो या कह लो काली,
या कह लो इसको भारत माता ।
सब पर इसके उपकार बहुत हैं,
यही तो है जीवन दायिनी ।
जय जय दुर्गे ----

मॉ न हिन्दू मॉ न मुस्लिम,
मॉ न होती सिक्ख ईसाई ।
मॉ तो बस एक प्रेम की गंगा,
सबकी जननी सबकी साई ।
करो न विखंडित इस मॉ को,
जो है सुख सौरभ विहारिणी ।
जय जय दुर्गे जय जय अम्बे
जय मॉ असुर संहारिणी ।
एक नाम और ले लो माता,
कहलाओ आतंक विनाशिनी ।

संध्या शुक्ला

स्वागत करो मां शक्ति रात्रि का

सिंह पर सवार हो, लाल चुनरी ओढ़ कर
शंख घंटा ध्वनि बजाकर आ रही है मां
ना मिठाई फूल से ना पैसों की बरसात से
मन तो खुश होती है बस हम बच्चों के सद् व्यवहार से
शुद्ध हो तन मन हमारा हो परिष्कृत बुद्धि सबकी
मां से इस वरदान की सबको है विनती करनी
राग देष और हिंसा का माँ कर दें शमन
जैसे मां ने किया था महिषासुर का दमन
संध्या

मेरी रचना

शक्ति तुम्हारा रूप है नारी,
फ़िर भी है कितनी लाचार।
नर अनुशासन में रखता है
चाहे बेचे बीच बाज़ार।

जन्म हुआ दुहिता का या फ़िर
माँ पर ही है वङ्काघात।
क्रूर नियति को दया न आई
कैसा तिर्यक भ्रू-निष्पात?

कन्या रुदन श्रवण करते ही
अमा छा गई आँगन में।
सदा उपेक्षित रही बालिका
फ़िर भी खटकी हर मन में।

द्वारे आई थी बरात, या
कहीं कोई शहनाई बजी थी
बिन दहेज लाचार पिता की
सुता हेतु ही चिता सजी थी।

तंदूरों में सिमटे जीवन या
फ़िर मगरमच्छ के नाम।
जिसका पोषण करती नारी
वह ही कर देती बदनाम।

कहने को स्वतंत्र है नारी
कैसे,कहाँ बताओ तो।
क्या सरकारी फाइलों में
खोलो;ज़रा दिखाओ तो।

नर को देकर जन्म तुम्हीं ने,
किया स्वयं को ही हलकान।
तन-मन-धन कर देती अर्पण,
फ़िर भी जीती कीट समान।

दुर्गे!दुर्गतिहारिणी हो तुम
क्यों नारी बन सहतीं दुर्गति?
नर के चक्रव्यूह में फंस कर
खो देतीं अपनी ही गति-मति

नवरात्रि में बहनों!हम अपनी
शक्ति को पहचानें।
आगे बढ़कर नभ को छू लें
तब जग को जानें माने।

शैलपुत्री

हे मात कष्ट निवारिणी धरों हाथ सिर जग तारिणी।

नवरात्रि के पावन दिवस आए हैं छाई उमंग है;
तुम प्रथम पूज्या हो मानिनी तुमसे सकल आसंग है ।
कर दो कृपा ब्रह्माण्ड पर तुम हो जगत उद्धारिणी ।

हे मात कष्ट निवारिणी....

एक कर में अम्बुज फूल है दूजे में सोहे त्रिशूल है;
दण्डित करे उसको तू जो करे आचरण प्रतिकूल है ।
उज्ज्वल वसन है गात पर तेरी अर्चना सुखदायिनी ।

हे मात कष्ट निवरिणी....

हे सती तुम शिव की प्रिया ,मोहा सकल जग का हिया ;
अनुपम छटा तेरी निरख हर्षित हुआ सबका जिया।
तेरी छवि अनिंद्य स्वरुप है तेरी वंदना फलदायिनी ।

हे मात कष्ट निवारिणी....

हे शैलपुत्री तुम्हें नमन करती अकिंचन 'शैल' है ;
मुझको न मां दुविधा कोई जब सामने तेरी गैल है।
करो मार्ग मेरा प्रशस्त तुम हे मात वृषभ सवारिणी।

हे मात कष्ट निवारिणी ....

मां आई मेरे द्वार

मां आई है मेरे द्वार
करके सोलह श्रृंगार
सुन कर मेरी पुकार
मां आई मेरे द्वार।।

सज-धज आन खडी है
मां मेरे द्वार खडी है
मेरी विपदा है छोटी
मां मेरी बहुत बडी है।।

मिलता न मुझको किनारा
मां बनती है मेरा सहारा
विघ्न-विनासन मईया मेरी
मै आराधना करू बस तेरी।।

सजदा में सर झुकता है
तुझमें मुझे रब दिखता है
तू अल्लाह तू ही वाहेगुरु
रूप अपरंपार दिखता है।।

मां मै बस कहता नही हूँ
सबको मातृ- तुल्य समझता
सब बेटियों का सम्मान करू
माताओं का मैं मान करूं।।

मुझे तू सब में दिखती है
जाँत-धर्म में नही बिकती हैं
सब को मै एक ही जानूं
सबमें तेरी ज्योति मानूं।।

दीश ने बचपन से सीखा है
जीवन जीने का सलीका है
गुरु ग्रंथ ने हमें सिखाया
मैंने भी हैं शीर्ष निवाया।।

हे भवानी महाशक्ति की स्वामिनी

हे भवानी महाशक्ति की स्वामिनी।
स्याह रातें त्रिनेत्रा शिवा दामिनी।
माँ तुम्हीं नंदिनी पार्वती अंबिका।
बुद्धिदात्री अभव्या सती गंगिका।।
विष्णुमाया शुभा दुर्गमा चण्डिका।
वंदना अर्चना प्रार्थना कंडिका।
बुद्धि दे मातु हे शारदे भामिनी।
दिव्यता दायिनी वैष्णवी कामिनी।।

भव्यता चेतना ज्ञान दे कालिका।
तू त्रयी तारणी मूढ़ मैं बालिका।
प्रेम की व्यंजना भक्ति से वार दो।
सिद्ध कल्लोलिनी नीर से तार दो।।
धूल का पुष्प हूँ माँ मुझे प्यार दो।
भक्ति पाएँ यथा शक्ति संसार दो।
रात्रि में कौमुदी की प्रभा सी मिले।
कालिमा राह की भानु सी ज्यों खिले।।

भाग्य के जाल से मुक्त हों जानकी।
वैभवी कीर्ति हो देव श्री धानकी।
काल के वेग को रोक दे अब्धिजा।
मोह माया नशा ज्यों चढ़े मध्विजा।।
तेज मार्तण्ड सा भव्य आलोक दे।
सर्वदात्री धरा और त्रैलोक दे।
लेखनी दिव्य सी शक्ति पा सिद्ध हो।
स्थापना धाम में ज्यों पराविद्ध हो ।।

हम आरती उतार

हम आरती उतार,
माता रानी अइली हमरे द्वारे।
कबहूं सूरत निहारी,
कबहू पउआं पखारी
हम त जाई वारी वारी
माता रानी अइली हमरे द्वारे।
हम आरती उतारी माता रानी अइली हमरे द्वारे।
उनकर दुर्गा रूप देख,
कांपे अत्याचारी ,
जिनकर शेर है सवारी,
माता रानी अइली हमरे द्वारे।
कबो सौंदर्य सौम्यता के रूप में
कबो रौद्र संघारक के रूप में
करलू मानव के उद्धार ,
माता रानी अइली हमरे द्वारा ।
हम आरती उतारी,
माता रानी अइली हमरे द्वारे।
तू ही हऊ सुख दायिनी,
तू ही दुःख हरनी,
कर द हमरो तू कल्याण,
माता रानी अइली हमरे द्वारा।
हम आरती उतारी,
माता रानी अइली हमरे द्वारा ।

माताजी का भजन

भक्तों की मैया तू सुनले पुकार
नैया हमारी तू कर भव से पार
संकट भारी है ,मेरी दुर्गे मां

लेकर के आस मन में हम आए हैं तेरे द्वारे ,
विनती हमारी सुन ले ,
तू है दाता तेरे हम भिकारी मैया मेरी
जग में तेरी महिमा छाई है
मेरी दुर्गे मां ।भक्तों की ,,,

रो रो के कह रही हैं आज मां ब्रज में आओ ,
बैचेन हैं ब्रज गोपी अपने भक्तों को दर्शन कराओ ,
पूजा तेरी करते यहां सब ब्रज नारी है ।
मेरी दुर्गे मां।

लेकर के नाम तेरा भव सागर से होते है प्राणी ,
रटते है शिव त्रिपुरारी तेरी महिमा किसी ने न जानी ,
भक्तों को दर्शन दो तेरी महिमा निराली है ।
मेरी दुर्गे मां ।

भवानी

माँ मन मंदिर आन पधारत भक्त सभी नित पूजत जाएँ।
पावक ,मोहक मूरत तुम्हरी मात मेरी नित भक्ति बढ़ाए।।
पीर हरो अब कष्ट हरो हम मात सदा गुण तुम्हरे गाएं।
ही महिषासुर मर्दिनी मैया भक्त सदा तेरे तुझको ही ध्यायें।।

पुष्प चढ़ावत, रोली लगावत,गीत सुनावत भक्त तुम्हारे।
भोग खिलावत, पूजत जावत, आरती गावत दास तिहारे।।
आज पधारो घर आँगन में हम भक्त माता है तुम्हरे सहारे।
बिगाड़ी बनाना,आस पुराना रो-रो के सब भक्त पुकारें।।

तुम हो शक्ति ,तुम कल्याणी, आदिशक्ति माँ तुम वरदानी।
दुखड़े हरती, मंगल करती, मैं हूं दासी तुम हो रानी।
तुम हो मैया भोली भाली जग जननी माँ तुम हो भवानी।
मेरी भी नैया पार लगा दो जग की माता जग की महारानी।।

हम आरती उतार

तेरी ममता का क्या गुणगान करू,
तू ही तो जग आधारा है ।
मै थी एक दुखिया बेचारी सी,
तूने ही तो मुझको उबारा है ।

मेरे सुख-दुख की साथी तू ही मां,
मेरे जीवन की सारथी तू ही माँ।
मेरे हर पल की साक्षी तुम ही हो ,
तूने ही तो मुझको संवारा है।

तेरी ममता.....आधारा है।

असुरो को भी सुर तू बनाती है,
गीतो मे लय ले आती है।
सूनी गोद को तू ही खिलाया है,
मुश्किल के भंवर से बचाया है ।

तेरी ममता .....

तेरे रूप की तुलना किससे करू,
चाँद सूरज भी जिसमे समाया है।
बन काली असुर को मिटाया है,
बन माया जगत को नचाया है।

तेरी ममता का क्या गुणगान करू,
तू ही तो जग आधारा है ।
मै थी एक दुखिया बेचारी सी,
तूने ही तो मुझको उबारा है ।

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332 Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

शहर समता विचार मंच द्वारा आयोजित नवरात्रि के पुनीत अवसर पर गूगलमीट द्वारा साहित्यिक आयोजन में उत्कृष्ट रचनाओं की प्रस्तुति हेतु किया गया सम्मानित

शहर समता विचार मंच चाहता है आपका भविष्य उज्ज्वल हो

संचालन
उमा मिश्रा प्रीति